राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का यादव गुर्जर समाज के प्रांतीय सम्मेलन में उद्‌बोधन

स्थानः- गुर्जर भवन तुलसी नगर भोपाल दिनांक :- 29 जनवरी 2012 समयः- 1.30 बजे

पिछले वर्षों के अनुसार भगवान श्री देवनारायण जी की जयंती के अवसर पर आयोजित गुर्जर समाज समिति के प्रांतीय सम्मेलन और स्नेह सम्मेलन में उपस्थित होकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

हमारे देश में जो सबसे पुरानी जातियां हैं, गुर्जर उनमें से एक है जिससे एक पूरी संस्कृति जुड़ी हुई है। इसलिए गुर्जर समाज जाति नहीं एक संस्कृति है।

देश के उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और गुजरात में गुर्जर हिन्दु धर्म के अनुयायी हैं। गुर्जर जाति का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। मिहिर भोज ने गुर्जर सम्राट के रूप में कई वर्षों तक पृथ्वी पर शासन किया है। गुर्जर समाज की उत्पत्ति को लेकर कई प्रकार की धारणायें प्रचलित हैं। गुर्जर को अपभ्रंश करके इसे गऊचर के नाम से भी सम्बोधित करते हैं और इस जाति को श्रीकृष्ण के वंशजों के रूप में माना जाता है। किन्तु यह तार्किक नहीं है।

प्राचीन काल के साहित्य ग्रंथों और शिलालेखों में भी गुर्जर शब्द का इस्तेमाल हुआ है और इनमें गुर्जरों का सम्बन्ध मनु, इच्छवाकु, प्रथू, हरीशचंद्र, रधु अथवा दशरथ पुत्रों से लिखा है और माना गया है। पौराणिक संदर्भों के अनुसार गुर्जर समाज सूर्य वंश से सम्बन्धित है। देश में लगभग 13 करोड़ लोग और मध्यप्रदेश में लगभग 35 लाख गुर्जर हैं । भोपाल जिले में लगभग सवा लाख गुर्जरों की आबादी बताई जाती है। प्रदेश के भिण्ड,मुरैना, दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी,गुना, राजगढ़,

भोपाल,शाजापुर, देवास, उज्जैन,खरगौन, खण्डवा, बड़वानी, बुरहानपुर, बैतुल, हरदा, होशंगाबाद नरसिंहपुर, जबलपुर, सिवनी और छिंदवाड़ा आदि गुर्जर बाहुल्य जिले हैं।

मैं समाज के लोगों से आग्रह करना चाहूंगा कि कोई भी समाज तब तक उन्नत नहीं हो सकता जब तक उसके लोग शिक्षित न हों। खास तौर से समाज की महिलाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता है। एक शिक्षित महिला अपने घर में जो बदलाव लाती है अंतत: उसका फायदा समाज और देश को ही मिलता है। गुर्जर समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को समाज के सभी बच्चों और महिलाओं को शिक्षित करने के संयुक्त प्रयास करने होंगे। शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि समाज से ऊंच-नीच की भावना खत्म होती है।

एक अच्छे समाज के रूप में पहचान बनाने के लिए बहुत जरूरी है कि सदियों से चली आ रही कुप्रथाओं और कुरीतियों से मुक्त होकर समता मूलक समाज का निर्माण करें। मृत्यु भोज एवं बाल विवाह जैसी पुरातनपंथी परम्पराओं से मुक्त होकर ही समाज के नव-निर्माण की कल्पना की जा सकती है।

यहां मैं, समाज के लोगों से विशेष रूप से कहना चाहूंगा कि निजी लाभ-हानि से ऊपर उठकर और अपनी महत्वाकांक्षाओं से मुक्त होकर समाज की उन्नति के समन्वित प्रयास करने होंगे। सामूहिकता ही में समाज की भलाई अंतर्निहित होती है। निजी राग द्वेष समाज- विकास के आड़े नहीं आना चाहिए। समूह हित हमेशा ही व्यक्तिगत हित से ऊपर होता है। जब तक समाज के लोग स्वंय बदलने के लिए तैयार नहीं होंगे तब तक समाज के परिवर्तन की उम्मीद करना व्यर्थ है।

इसी समाज से सरदार बल्लभ भाई पटेल, कमलराम गुर्जर, विजय सिंह पथिक, मेजर कुलदीप सिंह, राजेश पायलेट, सचिन पायलेट और गोविन्द सिंह बाबा जी जैसे

महानायक सामने आये हैं। किसी भी समाज में प्रतिभाओं की कमी नहीं होती। जरूरत उनको परखने वाली दृष्टि की होती है और उन्हें अवसर देने की होती है।

समाज के इस सम्मेलन में खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जो प्रतियोगिताएं हो रही हैं उसमें भाग लेने वाले प्रतियोगियों को मैं शुभकामनाएं देता हूं और उम्मीद करता हूं कि आज इन प्रतियोगिताओं के स्तर पर प्रतिस्पर्धा का जो जज्बा पैदा होगा उसे बनाये रखें। यह जज्बा भविष्य में जीवन की दौड़ में आने वाली चुनौतियों का सक्षमता से मुकाबला करने में सहायक होगा।

जय हिन्द